National Consciousness in India

सन् 1857 ई० की स्वाधीनता संग्राम इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना थी। यद्यपि इस संग्राम में भारतीयों को सफलता न मिल सकी तथापि भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रीय प्रेम की भावना जाग्रत हुई। भारत में हुए इस राजनीतिक जागरण के क्रमिक विकास के लिए अनेक कारण उत्तरदायी थे, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित थे-

1. ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति: ब्रिटिश शासन द्वारा स्थापित भारत की राजनीतिक एकता सामान्य अधीनता थी, लेकिन इसने सामान्य राष्ट्रीयता को जन्म दिया।
2. विभिन्न देशों से प्रेरणा:- जर्मनी एवं इटली जैसे देशों का एकीकरण का प्रभाव भारतीय जनमानस पर पड़ा। डॉ मजूमदार ने लिखा है, "विदेशों में हुई इन घटनाओं ने भारतीय राष्ट्रवादी धारा को स्वाभाविक रूप से प्रभावित किया।"
3. धार्मिक आंदोलन (समाज सुधारकों के प्रयत्न):- भारतीय जनता में राष्ट्रीयता की भावना को जाग्रत करने में धार्मिक आंदोलनों ने बड़ा महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत के इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी, धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलनों की शताब्दी थी। राजाराममोहन राय ने ब्रह्म समाज के माध्यम से, भारतीय जनता में अपनी प्राचीनतम गौरवमयी सभ्यता एवं परंपरा के प्रति विश्वास और आस्था को जगाया। इसके साथ अनेक संस्थाओं- आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन एवं थियोसोफिकल सोसायटी आदि ने भारतीयों के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में अनेक सुधार किए और भारतीयों में राष्ट्रीय एकता (राष्ट्रीयता) की भावना जगाई। इन आंदोलनों का परम लक्ष्य राष्ट्रवाद था।
4. पाश्चात्य साहित्य का योगदान:- हमारी राष्ट्रीय चेतना के विकास में पाश्चात्य साहित्य ने अत्यधिक सहायता दी। भारतीय नवयुवकों को जॉन स्टुअर्ट मिल, स्पेन्सर, रूसो, टॉलस्टाय, मिल्टन आदि विदेशी लेखकों और कवियों की स्वतंत्रता एवं समानता के विचारों से परिपूर्ण कृतियों के अध्ययन का अवसर मिला और स्वतंत्रता प्राप्ति की उग्र भावना पनपने लगी।
5. अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव:- भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना की जागृति में अंग्रेजी शिक्षा ने बहुत अधिक योगदान दिया। अंग्रेजी शासन के अंतर्गत भारत के प्रत्येक कोने शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार हुआ। इससे देश में भाषा पर आधारित एकता स्थापित हो गई और इससे विभिन्न प्रांतों के

शिक्षित लोगों को आपस में (अंग्रेजी के माध्यम से) विचार-विमर्श करने में बड़ी सहायता मिली फलस्वरूप क्रांति के कार्यक्रमों को संगठित बनाने में पर्याप्त सहायता मिली।

6. प्रेस की भूमिका :- प्रेस प्रचार एवं प्रसार का अत्यंत सबल माध्यम होती है। भारतीय जनता को, उन पर किए जा रहे अत्याचारों व शोषण से अवगत कराने में भारतीय प्रेस ने अत्यंत सराहनीय भूमिका निभायी। इंडियन मिरर, बंबई समाचार, हिंदू, पेट्रियट, अमृत बाजार पत्रिका, दि ट्रिब्यून, दि ज्ञानप्रकाश तथा केसरी आदि राष्ट्रीय अखबारों ने भारत में राष्ट्रवाद के जन्म में विशेष महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

7. इल्बर्ट बिल विवाद :- 1883 ई० में एक विधेयक पारित किया गया, जिसका उद्देश्य भारतीय पर लगी न्यायिक रोक को दूर करना था। इस इल्बर्ट विधेयक के द्वारा भारतीय न्यायाधीशों को भी अंग्रेज न्यायाधीशों के समान अधिकार देने का प्रयास किया जा रहा था, किंतु अंग्रेजों के द्वारा इस बिल का विरोध किया गया। अतः सरकार को इस बिल को वापस लेना पड़ा। जिस प्रकार इस बिल के विरोध में अंग्रेजों ने एकता प्रदर्शित की थी उसने भारतीयों को भी एकजुट होने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रो० डालवेल के अनुसार "इल्बर्ट बिल ने भारतीयों को शिक्षा दी और सावधान किया।"

8. लिटन के अन्यायपूर्ण कार्य :- दरबार समारोह, प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध, शस्त्र अधिनियम का पारित होना जनता में तीव्र असंतोष व्याप्त हो गया और उनमें स्वतंत्रता की भावना तीव्र हो उठी। वस्तुतः लार्ड लिटन के दमनकारी कार्य, राष्ट्रीय चेतना के मूल आधार थे।

इस प्रकार, पाश्चात्य शिक्षा और अन्य कारकों के माध्यम से भारतवासियों को अपने ध्येय प्राप्ति में सहायता मिली। इसके साथ ही ब्रिटिश सरकार की पक्षपात नीति से भी राष्ट्रीय आंदोलनों को पर्याप्त बल मिला।

Dr. Umesh Kumar Rai
Dept of History
S. B. College, Ara
S. B. College, Ara
B.A. (Part-iii), Paper-VI
History of India (1765-1950)
23.02.2024
Class - 02 (Second)
Mob: 8809947478
Email: ukrai.sasaram@gmail.com